GOVERNMENT DEGREE COLLEGE
MADHUBAN,PAKARI DAYAL"EAST CHAMPARAN,, (BIHAR)

Dr. GAUTAM KUMAR (Department of Geography)
Email.ID – gyan000005@gmail.comPhone No- 09430509798/9682491741

B.A-II - Geography of India

Topic → Soil - [मिट्टी], Paper-III.

मृदा - (Soil) — मृदा एक अमूल्य / बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधन है। मृदा शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के सोलम (Solum) शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है फर्श (floor).

परिभाषा (Difinition) (i) भू-पृष्ठ पर स्थित असंगठित पदार्थों की ऊपरी परत जो मूल शैलों और वनस्पति के योग से बनी है उसे मिट्टी कहते हैं।

⇒(ii) मृदा अनेक प्रकार के खनिजों, पौधों और जीव-जन्तुओं के अवशेषों से बनी है। पृथ्वी के पृष्ठ की ऊपरी परत पर असंगठित दानेदार कणों के आवरण वाली पतली परत मृदा कहलाती है।

(iii) पृथ्वी की ऊपरी सतह पर पाये जाने वाले ढीले (Uncompacted) कणों को उन्हें प्रकृति तथा कीड़े-मकोड़े ने बदला है। मिट्टी कहा जाता है।

Pedology (मृदा विज्ञान) — मृदा विज्ञान में मृदा का अध्ययन प्राकृतिक संसाधन के रूप में किया जाता है। इसके अन्तर्गत मृदा का निर्माण, मृदा का वर्गीकरण तथा मृदा के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक गुणों का अध्ययन किया जाता है।

प्राकृतिक संसाधनों में मिट्टी एक अमूल्य संसाधन है। मिट्टी से देश का आर्थिक विकास प्रभावित होता है। यह हमारी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सहायक होती है। मिट्टी का निर्माण शैलों के विखण्डन से होता है। अमेरिकी मृदा विशेषज्ञ डॉ० बैनेट के शब्दों में "मिट्टी भूपृष्ठ पर मिलने वाले असंगठित पदार्थों की वह ऊपरी परत है जो मूल शैलों तथा वनस्पति के योग से बनती है।" सामान्यतः धरातल की ऊपरी कोमल परत को मिट्टी कहते हैं जिसमें शैलचूर्ण तथा वनस्पतियों के सड़े-गले अंश अर्थात जीवांश (Humus) मिले होते हैं। शैलचूर्ण तथा जीवांशों की भिन्नता के कारण मिट्टियों की उर्वरा शक्ति भी भिन्न-भिन्न होती है।

मिट्टी का वर्गीकरण (Classification of Soil) :- मिट्टियों का वर्गीकरण अनेक भारतीय और विदेशी विद्वानों ने किया है जिनमें विश्वनाथ, और अकील, डॉ० चटर्जी, डॉ० वाडिया, डॉ० मुकर्जी तथा रूसी महिला श्रीमती चोकोलकामा (1932) प्रमुख हैं। परम्परागत दृष्टि से भारतीय मिट्टियों का वर्गीकरण कछारी, लाल, रेगड़, लैटेराइट मिट्टियों के रूप में किया गया है। भारतीय कृषि अनुसंधानशाला के राय चौधरी मुकर्जी ने भारतीय मिट्टियों को निम्न श्रेणी में बाँटा है।

<1> नदियों द्वारा लायी गयी मिट्टी,
<2> नदियों " " " " जिनमें खनिज लवण नमक भी मिलते हैं।
<3> तटीय प्रदेशों की कछारी मिट्टी जो नदियों द्वारा लायी गयी है।
<4> नदियों की तलहटियों की पुरानी मिट्टी,
<5> डेल्टा प्रदेश की नमकीन मिट्टी (रेह).
<6> चूना मिली हुई मिट्टी

GOVERNMENT DEGREE COLLEGE

MADHUBAN,PAKARI DAYAL"EAST CHAMPARAN,, (BIHAR)

Dr. GAUTAM KUMAR (Department of Geography)

Email.ID – gyan000005@gmail.comPhone No- 09430509798/9682491741

<7> गहरी काली मिट्टी
<8> माध्यमिक काली मिट्टी
<9> छिछली चिकनी दोमट मिट्टी
<10> लाल व काली मिट्टी का मिश्रण
<11> लाल दोमट
<12> लाल बलुही मिट्टी
<13> मिश्रित लाल दोमट बलुही मिट्टी
<14> कंकड़ीली मिट्टी
<15> तराई की मिट्टी
<16> पर्वतों की मिट्टी
<17> दलदली मिट्टी
<18> पीट मिट्टी
<19> मरुस्थलीय मिट्टी,

मिट्टी के प्रकार → इस विभाजन में एक ही प्रकार की मिट्टी को कई उपविभागों में बाँट दिया गया है। अतः इसके आधार पर प्रादेशिक वितरण निर्धारित करना असम्भव हो जाता है परन्तु आगे चलकर भारतीय कृषि अनुसंधान संस्था दिल्ली ने भारतीय मिट्टियों का वर्गीकरण चार प्रकार किया है।

<1> हिमालय प्रदेश की मिट्टियाँ (पर्वतीय पथरीली मिट्टी).
<2> विशाल मैदान की " (जलोढ़ मिट्टी)
<3> प्रायद्वीपीय पठार की मिट्टियाँ (काली, लाल एवं लैटेराइट मिट्टी)
<4> मरुस्थलीय प्रदेश की मिट्टियाँ (बलुई मिट्टी). **MAP- प्रमुख मिट्टियाँ,**

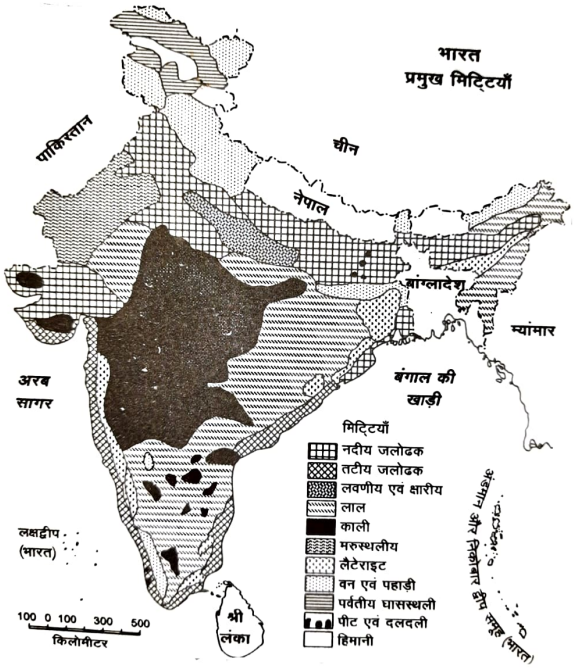

<1> **हिमालय प्रदेश की मिट्टियाँ** — हिमालय पर्वतीय प्रदेश में नवीन, दलदली तथा सरन्ध्र मिट्टियाँ पाई जाती हैं – भारत में इस प्रकार की मिट्टियाँ 2 करोड़ हेक्टेयर क्षेत्रफल में विस्तृत हैं। इनका विवरण निम्नलिखित है।

<क> **पथरीली मिट्टी** — हिमालय पर्वत के दक्षिणी पर्वतपदीय ढालों पर पथरीली मिट्टी पाई जाती है। नदियों द्वारा लाई गई यह मिट्टी छोटे-2 कंकड़, पत्थर तथा बालू के

GOVERNMENT DEGREE COLLEGE

MADHUBAN,PAKARI DAYAL"EAST CHAMPARAN,, (BIHAR)

Dr. GAUTAM KUMAR (Department of Geography)

Email.ID – gyan000005@gmail.comPhone No- 09430509798/9682491741

कणों से युक्त होती है, जो अनुपजाऊ है क्योंकि इसमें जीवांशों की मात्रा तथा वनस्पति, चूने एवं लोहे का अंश बहुत ही कम होता है।

〈ख〉 चूने तथा डोलोमाइट-युक्त मिट्टी — हिमालय पर्वतीय प्रदेश में चूने तथा डोलोमाइट से युक्त मिट्टी भी पायी जाती है। अधिकांश चूने का अंश वर्षा के जल में घुलकर बह जाता है। अतः यह मिट्टी कृषि कार्य हेतु अनुपयुक्त तथा अनुत्पादक हो गई है। यह मिट्टी नैनीताल, मसूरी तथा चकरौता आदि के निकटवर्ती क्षेत्रों में पाई जाती है। परन्तु पर्वतीय घाटियों में कहीं-कहीं इस मिट्टी में चावल उगाया जाता है।

〈ग〉 लावा तथा मैग्मा से निर्मित मिट्टियाँ → हिमालय पर्वत के कई क्षेत्रों में ज्वालामुखी से निकले लावा एवं मैग्मा से निर्मित मिट्टियाँ पाई जाती हैं। ये मिट्टियाँ आग्नेय शैलों के विखण्डन एवं अपरदन के फलस्वरूप निर्मित हुई हैं। इनमें लोहांश की मात्रा अधिक एवं चूने की मात्रा कम होती है। चाय उत्पादन के लिए यह मिट्टी सर्वश्रेष्ठ है। हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा, उत्तरांचल के देहरादून, पश्चिमी बंगाल के दार्जिलिंग आदि जिलों तथा असम के पहाड़ी ढलानों पर इसी मिट्टी की अधिकता है।

〈2〉 विशाल मैदान की मिट्टियाँ — उत्तरी भारत के विशाल मैदान के सभी क्षेत्रों में काँप या कछारी अथवा जलोढ़ मिट्टी पाई जाती है। इस मिट्टी का निर्माण हिमालय प्रदेश से निकलने वाली तीन बड़ी नदियों — सतलज, गंगा, एवं ब्रह्मपुत्र तथा उनकी सहायक नदियों ने अपनी निक्षेपण प्रक्रियाओं के फलस्वरूप किया है। भारत में इस प्रकार की मिट्टी का विस्तार 7.49 लाख वर्ग Km क्षेत्रफल पर है। इस मिट्टी को निम्नलिखित उपभागों में बाँटा जा सकता है।

〈क〉 पुरानी जलोढ़ मिट्टी — पुरातन जलोढ़ अथवा काँप मिट्टियाँ उन क्षेत्रों में पाई जाती हैं; जहाँ नदियों की बाढ़ का जल ऊँचाई के कारण नहीं पहुँच पाता है। इस प्रकार की मिट्टी को बाँगर मिट्टी (Bangar Soils) कहते हैं। इस मिट्टी पर अपरदन की क्रियाओं का प्रभाव अधिक हुआ है। कृषि कार्यों के लिए इस मिट्टी में सिंचाई की आवश्यकता अधिक होती है।

〈ख〉 नवीन जलोढ़ मिट्टी → जिन क्षेत्रों में बाढ़ आती रहती हैं अथवा जो क्षेत्र बाढ़ से प्रभावित होते हैं; वहाँ नदियाँ प्रतिवर्ष काँप मिट्टी की नई परत-दर-परत बिछा देती है। इस मिट्टी के कण बहुत बारीक होते हैं तथा इसमें नमी धारण करने की क्षमता भी अधिक होती है। इस प्रकार की नवीन काँप मिट्टी के क्षेत्र को खादर (Khadar) कहते हैं। इस मिट्टी में जीवांशों की मात्रा अपेक्षाकृत अधिक होती है।

〈3〉 प्रायद्वीपीय पठार की मिट्टियाँ — प्रायद्वीपीय पठार प्राचीन रवेदार चट्टानों से निर्मित है। इसमें कठोर आग्नेय शैलों की प्रधानता है। इस पठार पर प्राचीन मिट्टियाँ पाई जाती हैं जो लगभग 1 लाख वर्ग Km क्षेत्रफल में विस्तृत हैं। निर्माण, संरचना, रंग एवं उर्वरता की दृष्टि से इस क्षेत्र की मिट्टियों को

GOVERNMENT DEGREE COLLEGE

MADHUBAN,PAKARI DAYAL"EAST CHAMPARAN,, (BIHAR)

Dr. GAUTAM KUMAR (Department of Geography)

Email.ID – gyan000005@gmail.comPhone No- 09430509798/9682491741

निम्नलिखित भागों में बाँटा जा सकता है।

<क> काली मिट्टी – इस मिट्टी का निर्माण ज्वालामुखी चट्टानों के अपरदन एवं विखण्डन से हुआ है; अतः इसका रंग काला है। इस मिट्टी में लोहा, मैग्नेशियम, चूना, बॉक्साइट तथा जीवांशों की मात्रा अधिक होती है। भारत में काली मिट्टी का विस्तार प्रायद्वीपीय पठार के उत्तर-पश्चिमी भाग में लगभग 5 लाख वर्ग किमी क्षेत्रफल पर पाया जाता है। इस मिट्टी का विस्तार उत्तर में गुना (मध्यप्रदेश) से दक्षिण में बेलगाम (कर्नाटक) तक और पश्चिम में काठियावाड़ (गुजरात) से पूरब में अमरकण्टक (मध्यप्रदेश) तक है। अतः गुजरात, महाराष्ट्र, पश्चिमी मध्यप्रदेश और उत्तरी कर्नाटक राज्यों की यह प्रमुख कृषि मिट्टी है। राजस्थान में बूंदी एवं टोंक जिलों में तथा उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड सम्भाग में भी यह मिट्टी पाई जाती है।

इस सम्पूर्ण प्रदेश की नदी घाटियों में गहरी और उपजाऊ मिट्टियाँ पाई जाती हैं जबकि पहाड़ी ढालों पर मिट्टियाँ छिछली और कम उपजाऊ हैं।

इस मिट्टी की प्रमुख फसल कपास है, इसी कारण इसे कपास की काली मिट्टी भी कहा जाता है। कपास के अतिरिक्त इस मिट्टी में चावल, गन्ना, सब्जियाँ, फल, ज्वार, बाजरा, मूंगफली, तम्बाकू और सोयाबीन आदि फसलें भी उगाई जाती हैं। इन मिट्टियों को सिंचाई की पूर्ण सुविधा उपलब्ध नहीं है। अतः फसलों की प्रति हेक्टेयर उपज अपेक्षाकृत कम होती है।

विशेषताएं – <i> यह मिट्टी काले रंग की होती है।

<ii> इस मिट्टी में जलधारण करने की क्षमता अधिक होती है। वर्षा होने पर यह चिपचिपी-सी हो जाती है।

<iii> सूखने पर इस मिट्टी में 10-15 cm तक चौड़ी दरारें पड़ जाती हैं। जिससे इस मिट्टी में ऑक्सीजन पर्याप्त गहराई तक प्रवेश कर जाती है।

<iv> इस मिट्टी में कैल्सियम कार्बोनेट और मैगनेशियम तत्वों की मात्रा अधिक पाई जाती है।

<v> यह मिट्टी बहुत उपजाऊ होती है। इसमें जुताई भी कम करनी पड़ती है तथा यह शीघ्र ही भुरभुरी हो जाती है।

<ख> लाल व पीली मिट्टियाँ – यह मिट्टी लाल, पीले या भूरे रंग की होती है परन्तु इसमें लाल रंग की अधिकता होती है। इस मिट्टी में लोहांश अधिक होने के कारण इसका रंग लाल हो गया है। इस मिट्टी का निर्माण ग्रेनाइट, नीस व शिस्ट जैसी प्राचीन आग्नेय शैलों के विखण्डन से हुआ है। दक्षिणी भारत में यह मिट्टी लगभग 2 लाख वर्ग Km क्षेत्रफल में फैली है। यह मिट्टी चिकने कणों से युक्त होती है। इसमें फॉस्फोरस, पोटाश, नाइट्रोजन, चूना तथा ह्यूमस की कमी पाई जाती है। परन्तु लोहा, एलुमिनियम व चूना यथेष्ट

GOVERNMENT DEGREE COLLEGE

MADHUBAN,PAKARI DAYAL"EAST CHAMPARAN,, (BIHAR)

Dr. GAUTAM KUMAR (Department of Geography)

Email.ID – gyan000005@gmail.com Phone No- 09430509798/9682491741

मात्रा में मिलता होता है। इस मिट्टी में मोटे अनाज अधिक उगाए जाते हैं। जिनमें बाजरे का स्थान सर्वोपरि है। ऊँचे ढालों पर इन मिट्टियों में मूंगफली व आलू तथा घाटियों में गन्ना, भी उगाया जाता है। भारत में इस मिट्टी का विस्तार कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र के दक्षिणी-पूर्वी भागों, तमिलनाडु, मेघालय, उड़ीसा, पश्चिमी बंगाल, राज्यों एवं छोटा-नागपुर के पठार पर है। उत्तर प्रदेश राज्य के बाँदा, झाँसी, ललितपुर, मिर्जापुर, एवं हमीरपुर जिलों में भी यह मिट्टी पाई जाती है।

विशेषताएँ (i) यह मिट्टी लाल से चॉकलेटी रंग की शुष्क तथा कुछ कम उपजाऊ होती है।

(ii) ढीले संगठन की होने के कारण इस मिट्टी की जलधारण क्षमता कम होती है। अतः इसमें बिना सिंचाई के अच्छी खेती नहीं की जा सकती है।

(iii) निम्न भू-भागों में ये मिट्टियाँ दोमट प्रकार की होती हैं और उच्च भू-भागों पर बिखरी हुई कंकड़ों के समान होती है।

(iv) इस मिट्टी में लोहांश की मात्रा अधिक होती है, अतः वर्षा ऋतु में लौह-ऑक्साइड (जंग) के रूप में मिट्टी की ऊपरी पपड़ी पर आ जाता है।

(v) इस मिट्टी में मोटे कण तथा अघुलनशील तत्व अधिक मिले होते हैं।

(ग) लेटेराइट मिट्टी - इस मिट्टी का रंग लाल या पीला होता है। मानसूनी जलवायु की विशिष्टता के कारण ये मिट्टियाँ 200 cm से अधिक वार्षिक वर्षा वाले उच्च पर्वतीय ढालों पर विकसित होती है। यह मिट्टी सिलिका तथा लवणों से युक्त होती है। इसमें मोटे-2 कण तथा कंकड़-पत्थरों का बाहुल्य होता है। इस मिट्टी में चूना, फॉस्फोरस एवं पोटाश कम पाया जाता है परन्तु वानस्पतिक अंश पर्याप्त मात्रा में होते हैं। भारत में लेटेराइट मिट्टी 1.22 लाख वर्ग Km क्षेत्रफल पर फैली हुई है। वर्षा होने पर यह मिट्टी कोमल एवं नरम, परन्तु सूखने पर कठोर हो जाती है। उर्वरकों की सहायता से इसमें चावल, गन्ना, काजू, चाय, रागी, कहवा, तथा रबड़ आदि फसलों की कृषि की जाती है। लेटेराइट मिट्टी कर्नाटक, केरल, राजमहल की पहाड़ियों, महाराष्ट्र के दक्षिणी भाग, उड़ीसा, आन्ध्र प्रदेश, असम, तथा मेघालय के कुछ भागों में पाई जाती है। वास्तव में ये मिट्टियाँ पश्चिमी घाट, पूर्वी घाट, राजमहल की पहाड़ियों तथा मेघालय और असम की पहाड़ियों के ढालों पर विस्तृत है।

विशेषताएँ - (i) यह मिट्टी ईंट के रंग जैसी लाल या गहरे भूरे रंग की होती है।

(ii) इसमें मोटे कण तथा कंकड़-पत्थर अधिक पाये जाते हैं।

(iii) यह मिट्टी अपेक्षाकृत अधिक उपजाऊ नहीं है।

(iv) इस मिट्टी में नाइट्रोजन, चूना तथा फास्फोरस की मात्रा बहुत कम होती है।

GOVERNMENT DEGREE COLLEGE

MADHUBAN,PAKARI DAYAL"EAST CHAMPARAN,, (BIHAR)

Dr. GAUTAM KUMAR (Department of Geography)

Email.ID – gyan000005@gmail.comPhone No- 09430509798/9682491741

(4) मरुस्थलीय प्रदेश की मिट्टियाँ → मरुस्थलीय क्षेत्रों में वर्षा की कमी के कारण ऊसर, रेह, थूर तथा कल्लर जैसी अनुर्वर मिट्टियाँ पाई जाती हैं। ये मिट्टियाँ लवण एवं क्षारीय गुणों से युक्त होती हैं। इन मिट्टियों में सोडियम, कैल्सियम, मैग्नेशियम तत्वों की प्रधानता होती है। जिससे ये अनुपजाऊ हो गई हैं। इनमें नमी एवं वनस्पति के अंश नहीं पाए जाते हैं। इनमें सिंचाई कर केवल मोटे अनाज मूंगफली व दलहन ही उगाए जाते हैं। ये मिट्टियाँ सरन्ध्र होती हैं। यह मिट्टी कोमल एवं प्रवेश्य होती है। इन मिट्टियों में बालू के ढेर दिखलाई पड़ते हैं। इन मिट्टियों का विस्तार 1.14 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल पर मिलता है। मरुस्थलीय मिट्टी पश्चिमी राजस्थान, उत्तरी गुजरात, पश्चिमी उत्तर प्रदेश तथा दक्षिण पंजाब एवं दक्षिण-पश्चिमी हरियाणा राज्यों में पाई जाती है।

विशेषताएँ →
(i) इस मिट्टी में बालू के मोटे कणों की प्रधानता होती है।
(ii) यह मिट्टी अपेक्षाकृत अनुपजाऊ होती है।
(iii) इस मिट्टी में नमी धारण करने की क्षमता अत्यधिक कम होती है।
(iv) इस मिट्टी में जल गहराई तक प्रवेश कर जाता है।
(v) इस मिट्टी को जल की अधिक आवश्यकता होती है।
(vi) आर्थिक दृष्टि से ये मरुस्थलीय मिट्टियाँ उपयोगी नहीं होतीं, परन्तु इनमें सिंचाई द्वारा मोटे अनाज उगाए जा सकते हैं।

मिट्टी कटाव के कारण →

मिट्टी कटाव के निम्नलिखित कारण महत्वपूर्ण हैं

(1) **मूसलाधार वर्षा** – अत्यन्त तीव्र गति से वर्षा होने पर भूमि जल को सोखने में असमर्थ रहती है, इस कारण भूमि की ऊपरी परत की उर्वर मिट्टी कटकर जल के साथ बह जाती है।

(2) **भूमि का तीव्र ढाल** → अधिक ढालू भूमि पर मिट्टी का कटाव तेजी से होता है, इसी कारण मैदानों की अपेक्षा पर्वतीय क्षेत्रों में उर्वर मिट्टी के कटाव की प्रक्रिया अधिक रहती है।

(3) **वनों का तेजी से विनाश** – वृक्षों की जड़ें मिट्टी के कणों को बाँधकर रखती हैं। अतः अत्यधिक वन विनाश के कारण वनस्पतिविहीन भूमि कटावकारी शक्तियों से अधिक प्रभावित होती है।

(4) **अनियन्त्रित पशुचारण** – पशु चराई के कारण मिट्टी के कण बिखर जाते हैं। पशुओं के खुर (पैर) भी मिट्टी के कणों को ढीला कर देते हैं। अतः पर्वतीय क्षेत्रों में ढाल वाली भूमि पर पशुचारण के कारण मिट्टी कटाव में वृद्धि होती जाती है।

(5) **स्थानान्तरणशील कृषि** – पर्वतीय क्षेत्रों में झूमिंग या स्थानान्तरणशील कृषि से वनों के विनाश में तेजी से वृद्धि के कारण मिट्टी कटाव में तीव्रता आई है।

GOVERNMENT DEGREE COLLEGE

MADHUBAN,PAKARI DAYAL"EAST CHAMPARAN,, (BIHAR)

Dr. GAUTAM KUMAR (Department of Geography)

Email.ID – gyan000005@gmail.comPhone No- 09430509798/9682491741

⑥ अनियंत्रित जुताई – भूमि के ढाल के अनुरूप जुताई के कारण भी मिट्टी कटाव में वृद्धि होती है।

मिट्टी का संरक्षण (Soil Conservation.):— वस्तुतः देश के विभिन्न भागों में विविध प्रकार की मिट्टी को अपने स्थान पर स्थिर रखना, उनके विभिन्न जैविक और रासायनिक संघटक तत्वों को संतुलित बनाए रखना और उन्हें ह्रास से बचाना तथा उनमें निहित उर्वराशक्ति द्वारा दीर्घतम कृषि उत्पादन लाभ प्राप्त करना मिट्टी संरक्षण के मूलभूत पक्ष हैं। सामान्यतः देश में मिट्टी संरक्षण के लिए निम्नलिखित उपाय किया जाना अपेक्षित है।

1. अवनालिकाओं (Gullies) अवनालिकाओं की मेड़बंदी करना ताकि अवनालिकाओं के ऊपरी भाग से अपघटित पदार्थ में निक्षेप होने पर इनकी गहराई कम हो सके।
2. ढालू भागों में सोपान युक्त धरातल बनाना जिससे ऊँचाई से आने वाले पानी की धारा का वेग कम किया जा सके।
3. अवनालिकाओं युक्त क्षेत्र को समतल करना ताकि ऊबड़-खाबड़ धरातल को समतल करके उनमें कृषि एवं पशुचारण आदि कार्य हो सके तथा असामाजिक तत्वों के शरण स्थलों को समाप्त करके सुरक्षा की भावना विकसित की जा सके।
4. वृक्षारोपण करना – इस विधि से न केवल मिट्टी अपरदन को नियंत्रित किया जाना सरल है वरन् जलप्रवाह में कमी, वृक्षों से लकड़ी एवं अन्य पदार्थों की प्राप्ति, जलवायु सुधार और संपूर्ण पारिस्थितिकी व्यवस्था को संतुलित की भावना विकसित की जा सके।
5. पशुचारण पर नियंत्रण – हिमालय की ढाल एवं राजस्थान, गुजरात, झारखण्ड, और देश के कई अन्य शुष्क भागों में पशुचारण क्रिया में पशुओं के खुरों द्वारा मिट्टी का विखंडित होना और पशुओं द्वारा ऊपरी वनस्पति के आवरण को नष्ट करके मिट्टी के अपरदन में वृद्धि हुई है।
6. कृषि की वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग:— देश के बिहार, झारखण्ड, उड़ीसा और तमिलनाडु के पठारी भागों में सचल कृषि तथा देश के अधिकांश भागों में कृषि की रूढ़िवादी एवं अवैज्ञानिक विधियों ने मिट्टी अपरदन को बढ़ाया है अतः इन विधियों की रोकथाम हेतु फसलों के हेर-फेर, मिट्टी के पोषक तत्वों को बढ़ाने वाली फसलों, धरातलीय अनुकूलता की दृष्टि से फसलों का चयन और उन्नत कृषि विधियों का प्रयोग भी मिट्टी अपरदन की समस्या के समाधान में उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

निष्कर्ष (Conclusion):— भारत की मिट्टियों के वितरण प्रारूप में स्थलाकृति बनावट, जलवायु, वनस्पति आदि की भूमिका दृष्टिगोचर होता है। यहाँ मौलिक चट्टान के आधार पर क्वार्ट्ज, अपनीत, मिट्टी आदि मिट्टियाँ पायी जाती हैं। उनके काली मिट्टी, लाल एवं पीली मिट्टी, लैटेराइट मिट्टी, कालीदार रेगुर मिट्टियाँ पायी जाती हैं। पठारी भाग में क्रमशः लैटेराइट मिट्टी आदि पायी जाती है। मिट्टी की गुणवत्ता के ह्रास एवं क्षरण को रोकने वाली उपाय किया जा रहा है। //

GOVERNMENT DEGREE COLLEGE

MADHUBAN,PAKARI DAYAL"EAST CHAMPARAN,, (BIHAR)

Dr. GAUTAM KUMAR (Department of Geography)

Email.ID – gyan000005@gmail.comPhone No- 09430509798/9682491741

मॉडल प्रश्न (Modal Question). - ?

Q(1) भारत में पाई जाने वाली मिट्टी के प्रकारों का विवरण प्रस्तुत कीजिए?

Q(2). प्रायद्वीपीय और प्रायद्वीपेतर भारत की मिट्टी के प्रकारों का तुलनात्मक विश्लेषण कीजिए?

Q.(3). भारत के मिट्टी कटाव एवं संरक्षण पर संक्षिप्त विवरण दीजिए?

Q(4) भारत के मिट्टियों के विभिन्न प्रकारों के नाम बताइए तथा उनमें से किसी एक की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

Q(5). भारत की दो प्रमुख मिट्टियों के क्षेत्रों, विशेषताओं एवं कृषि उपयोगिता का विवरण दीजिए?

Q 6. भारत की मिट्टियों पर एक भौगोलिक निबन्ध लिखिए?

Q 7. भारत की मिट्टियों का वर्गीकरण और उनमें से किसी एक की विशेषताओं की विवेचना कीजिए।

Q 8. भारत की प्रमुख मिट्टियों का वर्णन कीजिए?

Dr. Gautam [signature]
10 अप्रैल 2018.